SALIENT FEATURES OF POLITICAL SOCIALIZATION

(राजनीतिक समाजीकरण की विशेषताएँ)

राजनीतिक समाजीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति राजनीतिक जीवन और राजनीतिक व्यवस्था के मूल्यों, लक्ष्यों एवं आदर्शों का ज्ञान प्राप्त करता है तथा अपने व्यवहार का निर्माण करता है। राजनीतिक समाजीकरण की विशेषताओं को निम्न रूप में दर्शाया जा सकता है -

(i) एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया के रूप में राजनीतिक समाजीकरण - राजनीतिक समाजीकरण एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है। इसके द्वारा मनुष्यों के विचारों और भावनाओं को प्रभावित करने का प्रयत्न किया जाता है। केवल वही राजनीतिक व्यवस्था और राजनीतिक नेतृत्व नागरिकों के विचारों और भावनाओं को अपने अनुकूल ढालने में सफल हो सकता है, जो नागरिकों अपने नागरिकों के मन-मस्तिष्क को भलि-भाँति समझता हो।

(ii) राजनीतिक शिक्षण-प्रशिक्षण की प्रक्रिया - राजनीतिक समाजीकरण राजनीतिक जीवन के प्रसंग में शिक्षण-प्रशिक्षण की प्रक्रिया है जो राजनीतिक जीवन, राजनीतिक व्यवस्था और उसके मूल्यों से सम्बन्ध रखती है। राजनीतिक समाजीकरण शब्द का प्रयोग तो युद्धोत्तर काल से शुरु हुआ लेकिन राजनीतिक जीवन के सम्बन्ध में शिक्षण-प्रशिक्षण की प्रक्रिया सदैव से चली आ रही है जो नागरिकता, नागरिकता प्रशिक्षण, तथा नागरिक समाजीकरण आदि नामों से जाना जाता था।

(iii) निरन्तर और गतिशील प्रक्रिया - राजनीतिक समाजीकरण व्यक्ति के जीवन-पर्यन्त और समाज में निरन्तर चलनेवाली एक गतिशील प्रक्रिया है। व्यक्ति जिस प्रकार के सामाजिक अनुभवों से गुजरता है, उसका व्यक्ति के दृष्टिकोण पर प्रभाव पड़ता है, परिणामतः उसका दृष्टिकोण पहले से भी अधिक दृढ़ हो जाता है अथवा उसमें परिवर्तन आने लगता है।

(iv) अत्याधिक विस्तारपूर्ण प्रक्रिया और धारणा - राजनीतिक समाजीकरण की प्रक्रिया और धारणा विस्तारपूर्ण है। राजनीतिक समाजीकरण, समाजीकरण

Scanned with CamScanner

की एक उप-प्रक्रिया है, अतः इसमें उन सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक तत्वों का अध्ययन भी सम्मिलित है जो राजनीतिक जीवन को प्रभावित करते हैं।

(v) राजनीतिक समाजीकरण की प्रक्रिया सभी समाजों और सभी राज. व्यवस्थाओं में - राजनीतिक समाजीकरण एक आधुनिक अवधारणा है, यह न केवल आधुनिक समाजों वरन् परम्परागत और घोर परम्परागत समाजों में भी राजनीतिक समाजीकरण की प्रक्रिया का अस्तित्व रहा है। अत्यन्त प्राचीनकाल में विश्व के देशों में राज्य की उत्पत्ति के दैवी सिद्धान्त का जो प्रतिपादन किया गया था, वह नागरिकों को राज्य के प्रत्येक आदेश का अनिवार्य रूप से पालन का पाठ पढ़ाते हुए राजनीतिक समाजीकरण का ही एक प्रयास था। यह सभी प्रकार के राज-व्यवस्थाओं में उसके शासक वर्ग समाजीकरण के निर्णायक तत्वों को अपने उद्देश्यों का वाहन बनाकर नागरिकों को अपने अनुकूल ढालने का प्रयत्न करती है ताकि जनसमान्य वैसा ही कार्य करे, जैसा वह चाहती है।

(vi) उद्देश्यपूर्ण तथा मूल्यों से जुड़ी हुई अवधारणा तथा प्रक्रिया- राजनीतिक समाजीकरण एक उद्देश्यपूर्ण तथा मूल्यों पर आधारित अवधारणा तथा प्रक्रिया है। राजनीतिक समाजीकरण की अवधारणा और प्रक्रिया राजनीतिक व्यवस्था के मूल्यों और दशाओं से गहरे रूप से जुड़ी हुई है। राजनीतिक समाजीकरण का एक निश्चित उद्देश्य राजनीतिक संस्कृति की रक्षा और उसका विकास अर्थात वांछित दिशा में परिवर्तन। उदाहरण के लिए, भारत जैसे देश में राजनीतिक समाजीकरण का उद्देश्य भारतीय नागरिकों को लोकतंत्र, धर्म निरपेक्षता, राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता और आर्थिक तथा सामाजिक न्याय में दीक्षित करना ही हो सकता है।

आमण्ड तथा कोलमैन ने राजनीतिक समाजीकरण के दो रूप बतलाए हैं - प्रकट और अप्रकट। जब राजनीतिक व्यवस्था सम्बन्धी जानकारी और मूल्यों का स्पष्ट रूप से सोचे-विचारे हुए तरीके से सम्प्रेषण किया जाता है तो यह प्रकट राजनीतिक समाजीकरण होता है। जब कोई सर्वाधिकारवादी शासन ऐतिहासिक विवरणों को संशोधित करवाता है अलावा जब कोई नया शासक वर्ग स्कूलों की शिक्षा व्यवस्था में भारी परिवर्तन करता है तो इसका आशय यह है कि राजनीतिक अभिजन जनसाधारण को विशेष राजनीतिक लक्ष्यों की ओर ढालने का प्रयत्न कर रहा है। राजनीतिक समाजीकरण के इस प्रकट रूप में न केवल प्रचार तन्त्र वरन् धन-प्रलोभन और जोड़-तोड़ तथा परोक्ष दबाव का भी आश्रय लिया जाता है और इस प्रकट रूप को न केवल अधिनायकवादी वरन् लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं में भी अपनाया जाता है।

राजनीतिक समाजीकरण का अप्रकट रूप एक सहज और स्वतः होनेवाली प्रक्रिया है। इसमें राजनीतिक सम्बन्धी मान्यताएँ, मूल्य और विचार बनाये नहीं जाते, वरन् व्यक्ति के समाजीकरण की वृहत्तर प्रक्रिया के साथ स्वतः ही ऐसे विचार बन जाते हैं। राजनीतिक समाजीकरण का यह रूप धीमी और जीवन भर चलनेवाली प्रक्रिया है। परन्तु यह अधिक स्थायी रहनेवाले विचारों के भावों को जन्म देती है। राजनीतिक समाजीकरण के इस अप्रकट रूप में व्यक्ति पर कोई विचार-धारा थोपी नहीं जाती, प्रचारतंत्र का भी बहुत अधिक उपयोग नहीं किया जाता, वरन् व्यक्तियों को केवल इस बात के लिए प्रेरित किया जाता है कि वे राज-व्यवस्था की दृष्टि से वांछित दिशा में आगे बढ़ें। ये व्यक्ति के जीवन में घुल-मिलकर उसके स्वभाव का एक अंग बन जाते हैं। स्पष्ट है कि दूरगामी परिणामों की दृष्टि से राजनीतिक समाजीकरण के अप्रकट रूप का इसके प्रकट रूप से अधिक महत्त्व होता है।

Scanned with CamScanner